पापा की डाँट..!

सुधीर नामा

ये बात है उन दिनों की जब पापा का स्थानांतरण मेरे गाँव से एक शहर में हुआ, उस समय मैं किशोरावस्था से युवावस्था की ओर बडी तेजी से बढ़ रहा था एवं बडा ही अल्हड़ व मस्त मोला हुआ करता था जिसको केवल मस्ती और यार–दोस्तों की धुन थी।

ऐसा इसलिए भी था क्येंकि मैं एक छोटे से गांव से निकलकर शहर की तरफ आया जहाँ मुझे हर छोटे बडे लोग, उनका रहन–सहन, दृष्टिकोण, जीने का का तरीका मेरे गाँव से अच्छा लगा और मैं बड़ी तेजी से इस शहरी चकाचौंध में ढलने लगा।

एक दिन मम्मी नीचे से आवाज लगा रही और मेरा कोई जवाब नही सुनकर उनको गुस्सा तो आया लेकिन अब माँ तो माँ ही होती है वो बडे प्यार से खाना लेकर मेरे पास आई ओर बोली मैं तुझे आवाज लगा रही थी और तु फोन लेकर बैठा है।

मैने फोन चलाते हुए जवाब दिया मम्मी मैं दोस्तों के साथ बाहर खाना खाऊँगा।

मम्मी थोडी भावुक हो गई फिर बोली बेटा रात में घर से बाहर कही नही जाना है तेरे पापा को पता चला ना कि यहाँ आने के बाद तु घर से बाहर रहने लगा है तो तेरे साथ–साथ मुझे भी डॉट पडेगी।

मैं मम्मी की गोद में अपना सिर रखकर धीरे से बोला "मम्मी प्लीज" मम्मी ने फिर कहा बेटा नही, तेरे पापा डॉटेगें.....!

अब मैंने थोड़ा भावुक होकर मम्मी को गले लगाया और बोला "मम्मी प्लीज ना" ये आखिर बार है उसके बाद आपकी सब बात मानूँगा।

माँ का दिल बडा नरम होता है....

मम्मी का दिल पिघल गया और मुझे जाने दिया।

अब जैसे–जैसे समय बीत रहा था मैं शहरी चकाचौंध में खो रहा था और परिवार, पढ़ाई, अनुशासन, व अपने संस्कारों से दूर होता जा रहा था जिसको देखकर मेरी मम्मी बड़ी परेशान थी।

ये बात वो अच्छे से जानती थी कि अगर उन्होनें ये सब बाते मेरे पापा को बताई तो वो मुझे डॉटने के साथ–साथ पीट भी सकते है लेकिन मम्मी का दिल अब जवाब दे रहा था क्योंकि उन्हें डर था कहीं मैं बिल्कुल हाथ से नही निकल जाऊँ इसलिए वो समय रहते पापा को सब बाते बताकर शांतिपूर्वक बडे प्यार से मुझे समझाना चाहती थी।

परन्तु भगवान को कुछ और ही मंजुर था, एक–दिन कुछ हुआ यूँ कि

मैं घर से बाहर था और पापा ऑफिस से हाफ–डे होने की वजह से जल्दी घर आ गये बस फिर क्या था मैं मिला नही घर पे तो पूँछा "सुधीर" कहाँ है मम्मी ने हिचकते हुए झूठ बोला "कोचिंग गया है" शाम को 7 बजे तक आ जाऐगा।

पापा ने कहा इनती देर कौनसी कोचिंग जाता है...!

मम्मी बोली वो सभी विषयों की कोचिंग जाता है तो टाइम लगता है।

पापा– कब जॉइन की.....? आपने मुझे क्यों नही बताया।

मम्मी– अभी मिछले महीने ही जॉइन की है, फीस Rs-57000 है और मैं आपको बताने वाली ही थी।

पापा– ठीक है, कोचिंग और कॉलेज से रिर्पोट कार्ड आये तो मुझे बताना।

मम्मी– हाँ, आप आराम कर लो।

शाम के 8 बजे तक भी मैं घर नही लौटा तो पापा ने मम्मी से पूँछा क्या हुआ वो 7 बजे आने वाला था आया क्युँ नही।

मम्मी ने कहा मैं फोन करती हुँ उसको, आ जायेगा कभी–कभी ट्रैफिक की वजह से लेट हो जाता है।

ईधर मैं अपनी मस्ती में मस्त था मम्मी के फोन आते रहे।

जैसे–जैसे घड़ी में एक–एक मिनट निकल रहा था वैसे–वैसे मम्मी की धडकनें बढ़ रही थी।

8.30 बज गये है मैं अभी तक घर नहीं आया तो पापा ने फोन किया लेकिन कोई जवाब नही मिला अब पापा आग बबूला हो गये और मम्मी से बोले वो साहबजादा कहाँ है, ना तो फोन रिसीव कर रहा है ना कॉल कर रहा है, कौनसी कोचिंग जाता है वहाँ के नम्बर दो पता करता हूँ क्या बात है...!

मम्मी के सब्र का बांध अब टुट चुका था वो रोने लगी।

पापा अब बहुत तनाव में आ गये वो बोले क्या हुआ, कुछ हुआ है क्या, क्या बात है आप क्यों रो रही है...।

मम्मी ने डरते हुए सारी बाते बताई कि वो हाँथ से निकल गया है, रात को 10–11 बजे तक घर आता है।

पापा का गुस्सा अब सातवें आसमान पे था, मम्मी से बोले इतने बडे–बडे झूठ आप मेरे से बोलती आ रही है और उसकी उन सब बातो ंपे पर्दा डाल रही है। आपने ये अच्छा नही किया, माँ के प्यार में आपने उसे बिगाड दिया.....

पापा बहुत गुस्से में, आज आने दो उसकी खैर नहीं है, मैं आज उसी के कमरें मे जा रहा हूँ फिर कहाँ छुपेगा।

मम्मी का दिल बहुत घबरा रहा था कि कही कुछ बडी–बात ना हो जाये

10.30 बजे जब मैं घर आया तो मुझे आज किचन में मम्मी नही दिखी मुझे लगा सो गई होंगी, फिर में चुपके से दबे पॉव अपने कमरे में ऊपर जाने लगा।

ऊपर जाके देखा तो मेरी सॉसे रूक सी गई पापा–मम्मी को कमरे में देखकर....

पापा– और साहबजादे कहाँ से आ रहे हो, कौनसी कोचिंग में इतनी रात तक क्लास लगती हैं।

मैं– वो पापा..... मैं..... वो आज.....!

पापा– मुझे सब बता दिया है तेरी मम्मी ने, खूब मौज मस्ती की जा रही मेरी पीठ पीछे हाँ....

.

मैं– नहीं पापा वो तो बस आज ही....

पापा– झूठ बोलता है मेरे से..... बेटा ये जो तु मौज मस्ती, ऐशो–आराम कर रहा है ना ये मेरी मेहनत की कमाई है जो तु उडा रहा हैं।

मैं– हाँ–हाँ आप अकेले ही मेहनत करते है बाकि दोस्तों के पापा तो कुछ करते ही नही है।

मम्मी– ऐ जबान मत लड़ा चुप–चाप "Sorry" बोल की आज के बाद पापा ऐसी गलती नहीं करूँगा।

पापा– आप तो रहने ही दो, आपके ही लाड–प्यार की वजह से आज उसकी ये हिम्मत हो गई कि मेरे सामने बोल रहा है। ऐसी औलाद से तो नही होना ही अच्छा हैं।

मैं– मैं क्युँ "सॉरी" बोलूँ मैंने क्या गलत किया है, रात को लेट आना, दोस्तों के साथ घूमना ये कोई गलत बात नही है, मेरी भी जिंदगी है।

पापा– अच्छा, साहबजादे की भी जिंदगी है, तो फिर इस जिंदगी को चलाने के लिऐ क्या करते हो आप (व्यंग में)

मैं– जो भी खर्चा करता हूँ अपनी पॉकेट मनी से करता हूँ

पापा– ये पॉकेट मनी किसने दी (गुस्से में) तेरे पैन खरीदने से लेकर महंगे–महंगे शौक पुरे करने का खर्चा मेरी जेब से जाता है और तु मुझे बता रहा है तेरी जिंदगी है।

मैं– हाँ तो मैने कहा था क्या आपको, पैदा करो मुझे (गुस्से मे)

पापा– मुझे थप्पड़ मारते हुए..... बस अब बहुत हुई तेरी बदतमीजी...!

मम्मी की ओर इशारा करते आप अब कुछ मत बोलना।

फिर मेरी तरफ इशारा करते हुए– तुझे इस घर में रहना है तो नियम कायदे मानने पड़ेगे, वरना आज से तेरी पॉकेट मनी, महंगे–शौक सब बंद है।

मम्मी– रोते हुए, बेटा क्यों बात बढ़ा रहा है, तेरे पापा गुस्से में है " सॉरी " बोल दे।

पापा– कोई सॉरी नही, आपने ही बिगाड़ दिया है इसे, आप अब चुप रहे इसको जिंदगी का असली मतलब समझाना पड़ेगा।

मम्मी– आप नीचे जाईये प्लीज..... मैं गारंटी लेती हुँ अब नही करेगा, छोड़ो ना आप, बच्चा है।

पापा– तुम चुप रहो, ये बच्चा नही है ये आज मेरे से भी बड़ा हो गया इसकी भी जिंदगी, एकान्तता है बस ये ही पता है बाकि पढ़ाई का पूँछ लो इसको कुछ आता भी है (गुस्से में)

मेरी तरफ फिर से इशारा करते हुए– हॉ भाई बोल क्या करना है अब तेरा, नियम कायदे में रहना है तो रहो मेरे घर में वरना अपनी जिंदगी अपने दम पे कहीं ओर जिओ

मम्मी– आप क्या बोल रहे है गुस्से में, नीचे चलिये आप मेरे साथ, मैं कल इसे समझा दुँगी।

पापा– आप नीचे जाइये अभी के अभी, मुझे इससे फाइनल बात करनी है।

मैं– मम्मी बोल दो इनको अगर मेरी पॉकेट मनी बंद करेंगे तो फिर कल से कॉलेज जाना बंद कर दुँगा और बचपन से ही मैंने इनके नियम कायदो का पालन किया है अब मुझे खुली हवा में सॉस लेना है।

मम्मी– थप्पड मारते हुए..... बहुत बोल रहा है तु आज

पापा– थोड़ा भावुक होते हुए.... मम्मी की तरफ देख कर, अब ये बडा हो गया है, इसको खुली हवा में साँस चाहिए ना वो तो इसको यहाँ मिलेगी नहीं , बेटा तु अपने लिए कोई दूसरा घर देख ले

मै– हाँ–हाँ देख लुँगा वैसे भी आप ये ही कर सकते है, आज तक कौनसा फर्ज सही से निभाया है, बचपन से ही अपने नियंत्रण में रखा है (गुस्से मे)

मम्मी– फिर से थप्पड मारते हुए– चुप हो जा नालायक,

मम्मी, पापा का हाथ पकड़ते हुए आप चलिऐ ना नीचे प्लीज !

पापा– नहीं, अब तो इस घर में या तो ये रहेगा या मैं रहुंगा जिसको खुली हवा में साँस चाहिए वो अभी इस घर से बाहर जाऐगा

मैं– हाँ जा रहा हूँ वापस कभी मुड़कर नही आउँगा, पैक कर रहा हूँ अपना समान।

मम्मी– ज्यादा मत बोल तु अब बेटा.....!

पापा की तरफ देख कर आप तो मानिये मेरी बात, प्लीज नीचे चलिये और माफ करें उसे बच्चा है।

पापा– तुम्हारी ही बातें सुनी तभी तो आज ये नौबत आ गई है।

मैं– जा रहा हूँ मैं, अब आप मेरी टेंशन छोड़ दे।

पापा– ये सामान कहाँ ले जा रहा है, ये फोन कहाँ ले जा रहा है, इन सभी में तेरा योगदान कुछ नही है तुझे खुली हवा में साँस चाहिए ना तो खुद से करो कुछ....!

मम्मी– रोते हुए प्लीज आप दोनो मेरी बात सुनो , क्यों मुझे जीते–जी मारे रहे हो।

पापा– तुम चुप रहो, इसकी जिंदगी है जैसा चाहे वैसा करने दो, तुम ये मान लो आज से हमारा कोई बेटा नही है। ये ही मेरा निर्णय है

मम्मी का दिल और आँखे जोर–जोर से रो रही थी लेकिन ना तो मैं मान रहा था ना पापा का गुस्सा कम हो रहा था, मम्मी बेचारी कुछ नही कर सकती थी।

उस रात मैं घर से खाली हाथ केवल लॉवर व टी–शर्ट में गुस्से से निकल तो आया लेकिन बाहरी दुनिया का कोई अनुभव नही था ना ही दोस्तों से संपर्क करने के लिऐ पैसे या फोन था। ऐसे मैं पुरी रात अकेले निकालना मुश्किल था।

फिर भी मैंने हिम्मत करके घर से 1 किलोमीटर दूर चलके एक पार्क में आया जहाँ बिल्कुल सुनसान था क्योंकि रात के 12 बज चुके थे, वहाँ मुझें डर भी लगे, और भुख भी लग रही थी लेकिन वापस घर नही जाना चाहता था।

मैंने सपने में भी सोचा ना था कि वो रात मेरी जिंदगी की सबसे लम्बी रात होने वाली है, मैं उस पार्क में एक कोने के पास वाली कुर्सी पर बैठ गया। वहाँ बैठने के बाद भावुक हो गया और आँखों से आँसु आने लगे और सोचा कि इस दुनिया में कोई नही है मेरा...!

उस वक्त मेरा मन कर रहा था कि वापस घर चला जाऊँ लेकिन गुस्सा इतना भरा था कि वो घर जाने नही दे रहा था। चुँकि रात घनी थी तो मैं कोने वाली सीट से उठकर अंधेरे की तरफ चला गया ताकि कोई मुझे देख नहीं सके, डर तो मुझे लग ही रहा था इसलिए नींद कहाँ से आती वो भी उस सुनसान पार्क में, ऊपर से वहाँ मच्छरों का पुरा झुण्ड था जो अपनी ही मस्ती में काटे जा रहा था...।

उस रात की एक मिनट भी एक घण्टे के जैसी कट रही थी जैसे–तैसे करके सुबह के चार बजे तक वो रात रोते–रोते निकली।

चार बजे के बाद पार्क में थोड़ी हलचल होने लगी, लोगों की आवाजे आने लगी तब जाकर दिल को थोड़ा चैन आया। उस रात मुझे ये समझ आ गया था कि इस दुनिया में परिवार और माता–पिता का बच्चें की जिंदगी में क्या महत्व है।

वो किन तकलीफों व दर्दों से अपने बच्चे की रक्षा करते है और कैसे खुद नुकीले पत्थरों पर चलकर अपने बच्चे के लिऐ मखमली रास्ता व ऐशों आराम की जिंदगी देते है।

इस तरफ घर में पूरी रात मम्मी–पापा ने रोते–रोते निकाली और सुबह होते– होते मम्मी की तबीयत बिगड़ने लगी, अब पापा को कुछ नही दिख रहा था कि क्या करे, कैसे करें....! पापा ने अपना मोबाइल निकालकर चैक किया कि उसके किसी दोस्त का मोबाइल नम्बर मिल सके जिससे ये पता चल सकें कि मैं कहाँ हूँ परन्तु अफसोस उनको कुछ नही मिला, अब पापा बहुत तनाव में आ गये।

पापा ने अपने दोस्त अजीत अंकल जी को फोन किया और रात की घटना के बारे में बताया, अजीत अंकल ने कहा टेंशन मत लो, मैं आ रहा हूँ फिर पुलिस स्टेशन में चलकर रिपोर्ट करते है।

थोड़ी देर में अजीत अंकल घर आ गये और पापा के साथ पुलिस स्टेशन चले गये परन्तु पुलिस ने 48 घण्टे तक रिपोर्ट दर्ज नही करने का बोला और कहा कि आप अपने बच्चे के दोस्तों, उसके स्कूल या कॉलेज में जाके पता करे कहीं ना कही उसके दोस्त का लिंक व मोबाइल नम्बर मिल जाएगा।

अब पापा को थोड़ी सी तसल्ली मिली कि चलों उसके दोस्तों में से किसी ना किसी का नम्बर तो कॉलेज से मिल जाऐगा।

पापा व अजीत अंकल मेरे कॉलेज में गये और वहाँ जाकर उनसे निवेदन किया कि वो मेरे दोस्तों के मोबाइल नम्बर या उनके घर के पते दें।

मेरे कॉलेज के प्रिंसिपल सर ने मेरी केमेस्ट्री प्रोफेसर को बुलाया और पुछा कि मेरे साथ कौन–कौन रहता है या मैं सबसे ज्यादा किसके साथ रहता हूँ चुँकि मैं सबके साथ रहता था इसलिऐ यह बता पाना मुश्किल था कि मैं किसके नजदीक था।

आखिरकार एक–दो घण्टे के बाद पता चला कि मेरे मित्र–मंडली में मेरा दोस्त "मनसुर" कॉमन था लेकिन उसका नम्बर नही है, पापा व अजीत अंकल ने उसके घर का पता लेकर उसके घर पहुँचे।

वहाँ उससे मेरे नजदीकी दोस्त "योगेश" के नम्बर लिये और फोन करके उसे सारी बात बताई। योगेश ने पापा को बोला कि अंकल जी वो मेरे पास तो नही आया है फिर भी मैं आ रहा हूँ सारे दोस्त को लेकर हम सब मिलकर "सुधीर" को ढुँढ़ लेगें, आप चिंता नही करे।

मेरे सारे दोस्त, पापा व अजीत अंकल मुझे रेलवे स्टेशन, पार्क, बस स्टैण्ड मंदिर आदि जगह पर तलाशना चालु कर दिया परन्तु दोपहर तक मैं, कही नही मिला उनको.....!

इधर मैं सुबह 6 बजे अपने दोस्त आनंद के घर की तरफ पैदल चल पडा जो कि उस पार्क से चार–पाँच किलोमीटर दूर था। उससे मिलकर उसे सारी बात बताई और कहा कि यार कुछ खाने को दे भूख लग रही है।

उसने कहा कि तु पहले आराम से फ्रेश हो कर आ और नहा ले, मैं खाने के लिए मम्मी को बोलता हूँ।

मैने उसे मना कर दिया कि तु अपने घर में इस घटना के बारे में कुछ मत बताना वरना यहाँ सब परेशान होंगे।

12 बजे तक मैं आनंद के साथ उसके घर पर खाना खाया और उससे बोला कि यार मुझे कोई काम करना है। उसने मुझे समझाया कि तु गलती कर रहा है, अपने घर चला जा और पापा से माफी मांग कर बात को खत्म कर दे लेकिन मेरा अंहकार मुझे ऐसा करने नही दे रहा था परन्तु असल में मेरा दिल तो घर जाना चाह रहा था।

उसके बार–बार कहने पर भी जब मैं घर जाने को तैयार नही हुआ तो उसने कहा कि यार अब तेरी मर्जी है, तु मेरे घर पे रूक जा लेकिन सारी घटना मेरे घरवालों को बतानी पडेंगी। ऐसा मैं चाहता नही था अंततः मैं उसके घर से वापस उसी पार्क में जाने के लिए रवाना हुआ ।

आनंद ने फिर समझाया कि भाई यार एक बार और सोच ले, मैंने उसको बोला कि जो होगा देखा जाऐगा।

रास्ते में पैदल चलते–चलते मुझे मेरे दोस्त "सुरेन्द्र" ने देख लिया जो मुझे ढुँढ रहा था उसने मुझे रोका और गुस्से में बाइक से उतरकर थप्पड़ मारते हुए बोला कहाँ, किधर जा रहा है तु , तुझे शर्म नहीं आई तेरे पापा रो रहे है तुझे ढुँढते–ढुँढते, और

तेरी मम्मी की तबीयत खराब हो गई है उनका रो–रो कर बुरा हाल हैं।

मैंने कहा तो फिर मुझे निकाला ही क्युँ घर से, उसने कहाँ भाई किसके मम्मी पापा अपने बच्चों को नही डाँटते है और जितना डाँटते है उससे कई गुना प्यार भी तो करते है वो नही दिखा क्या तुझे घर छोडने से पहले।

बचपन से लेकर आज तक तेरी हर मांग को पुरा किया है। वो खुद से ज्यादा प्यार और भरोसा तेरे पे करते है तभी आज रो–रो कर उनका हाल बुरा हो गया।

मुझे अब अपनी कि हुई गलतियों का अहसास होने लगा। उसने पापा और बाकि सबको फोन करके बता दिया कि "सुधीर" मिल गया है और वो मेरे को लेकर घर जा रहा है सब वही आ जाऐं।

घर लाने के बाद जैसे ही मम्मी ने देखा वो रोने–लगी और गले लगाकर कहाँ की तुने तो जान निकाल दी मेरी, अब कभी छोड़कर मत जाना वरना मैं तो जीते–जी मर जाऊँगी, मेरी भी आँखे नम हो गई थी।

जब पापा घर के अंदर आये तो उन्होंने मेरा हाथ पकड़कर गले लगाया और बोला कि मैं तो गुस्से में बोल गया पर तु तो नही जाता घर से, यार एक तु ही तो मेरा घमंड है जिसको देखकर मेरी छाती फूल जाती है।

दुबारा ऐसा मत करना मेरे बेटे....!

मेरी अब पापा से नजरे मिलाने की हिम्मत नही हो रही थी मुझे अंदर ही अंदर पश्चाताप खाये जा रहा था कि गलती मैंने कि और रो मम्मी–पापा रहे हैं।

ये आज भी मेरी सारी गलतियों को माफ करके मुझे सीने से लगा रहे है। उस दिन मैंने अपने मन में प्रण लिया कि कभी मेरे देवतुल्य मम्मी–पापा की आँखों में आँसु आने का कारण नही बनुँगा।

आखिर पापा कितने ही सख्त, नियम कायदे वाले थे लेकिन उस दिन वो रो रहे थे तब जाके मुझे ये समझ आया कि पापा होना कितना कठिन है।

हमें वो बाहर से सख्त दिखते है लेकिन अंदर से गुलाब की तरह कोमल होते है।

उसके बाद की जिंदगी, **"पापा की डाँट"** के कारण लेखक के रूप में उभर कर बाहर आई....!!!